ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 16 कुल पृष्ठ-8 16 से 22 नवम्बर, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 आ. कृ.-13

आर्य समाज छपरौली, बागपत में "एक शाम शहीदों के नाम" कार्यक्रम समारोह पूर्वक सम्पन्न

शहीदों के सपने अभी अधूरे– किरणजीत सिंह

क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेकर युवाजन उनकी विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाने का लें संकल्प

– स्वामी आर्यवेश

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी उद्बोधन देते हुए

छपरौली कस्बे में आर्य समाज छपरौली के तत्वावधान में एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की जबकि मुख्य अतिथि शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे किरणजीत सिंह रहे। कार्यक्रम में स्वतंत्रता सेनानी चौ पृथ्वी सिंह बेधड़क के सुपुत्र सहदेव बेधड़क ने देश भक्ति गीत सुनाए तथा युवाओं में जोश भरने का कार्य किया।

मुख्य अतिथि किरणजीत सिंह ने कहा कि आज शहीदों के सपने अधूरे हैं। उनको पूरा करने के लिए आज देश की सरकारों के साथ आम जन मानस को भी अपना सहयोग करना चाहिए। जब तक देश मे जातिवाद, साम्प्रदायिकता, अमीर गरीब के बीच मे खाई, छोटे बड़े के नाम पर भेदभाव भाषा के नाम पर भेदभाव, क्षेत्रवाद के नाम भेदभाव रहेगा तब तक उनके सपने अधूरे हैं। आज यदि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है तो उसके पीछे क्रांतिकारियों का बलिदान

श्री किरणजीत सिंह जी उद्बोधन देते हुए

है। किरणजीत सिंह जी ने शहीदे आजम की वो पंक्तियां सुनाई जिसमे उन्होंने क्रांति की व्याख्या की है। भगत सिंह कहते है क्रांति से हमारा मतलब वर्तमान व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करना है। क्रांति की मशाल विचारों की शान पर तेज होती है। आज हमें अपने विचारों की मजबूती की आवश्यकता है।उन्होंने कहा कि क्रांतिकारी किसी परिवार के नही होते वे पूरे देश के होते हैं।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि युवाओं को स्वतन्त्रता आन्दोलन की बलिवेदी पर बलिदान होने वाले क्रांतिकारियों को श्रद्धा सहित याद करना चाहिए, उनके जीवन से प्रेरणा लेने व उनकी विचारधारा को जन जन तक पहुंचाने का संकल्प लेना चाहिए। षड्यन्त्र के तहत हमारे क्रांतिकारियों को पीछे धकेला जा रहा है। आर्य समाज का देश की आजादी में बहुत बड़ा योगदान रहा है। भगतसिंह की तीन पीढियां आर्य समाज से प्रेरित रही। उन्होंने बताया कि भगत सिंह के दादा जी ने स्वय स्वामी दयानंद जी से यज्ञोपवीत लिया था। आर्य समाज आज भी शहीदों के सपनों को साकार करने के लिए आंदोलनरत है। स्वामी जी ने कहा कि आज धर्म, भाषा, जाति के आधार पर देश को बांटे जाने का कुप्रयास चल रहा है। इस प्रकार के कार्यों का आर्य समाज ने हमेशा प्रतिकार किया है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज सामाजिक परिवर्तन का

अगले पृष्ठ पर जारी

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते आयोजक

श्री संजीव खोखर चेयरमैन छपरौली को सम्मानित करते हुए

शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे श्री किरणजीत सिंह जी को सम्मानित करते हुए आयोजक

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ–1 का शेष

आर्य समाज छपरौली, बागपत में ''एक शाम शहीदों के नाम'' कार्यक्रम समारोह पूर्वक सम्पन्न

अग्रदूत रहा है और आज भी है। देश में व्याप्त विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आर्य समाज निरन्तर कार्य कर रहा है। स्वामी जी ने कहा कि भगत सिंह के अदम्य साहस और बलिदान की गाथा हमेशा युवाओं को प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

छपरौली के चेयरमैन संजीव खोखर ने स्वागत भाषण में सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा कहा कि ऐसे कार्यक्रम ज्यादा से ज्यादा आयोजित होने चाहिए।

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के प्रधान चौ. सहदेव सिंह बेधड़क को सम्मानित करते आयोजक

कार्यक्रम की सफलता में आर्य समाज छपरौली के प्रधान कृष्णपाल खलीफा, कार्यवाहक प्रधान धर्मेन्द्र पहलवान, कोषाध्यक्ष,पप्पू पहलवान, नरेंद्र , उपप्रधान अवनीश आर्य, उपप्रधान योगेंद्र आर्य ,मंत्री धर्मेन्द्र भूरा,पूर्व चेयरमैन खिलारी सिंह,आर्यसमाज छपरौली के पूर्व प्रधान महक सिंह आर्य ,पूर्वप्रधान धर्मबीर सिंह, पूर्वप्रधान राजसिंहआर्य , श्री ओमपाल सिंह आर्य, श्री जयदेव आर्य, तेजपाल सिंह दरोगा ,योगेन्द्र उर्फ गिन्दू, मा वेदप्रकाश आर्य श्री सुशील रुहेला, श्री सोहनबीर सिंह, एम पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य श्री जितेन्द्र आर्य,श्री शिवकुमार जी सबगा,आर्यसमाज श्री यशपाल सिंह ,सुधीर बाबूजी हेवा, सुधीर बाबूजी बदरखा, मा पुष्पेन्द्र, मनोज कुमार ,आर्यसमाज रठोडा, व आर्यसमाज रमाला के पदाधिकारी भी उपस्थित थे इस अवसर पर आंखे मीडिया से श्री आरडी उपाध्याय,व सामाजिक कार्यकर्ता श्री सुरेन्द्र चौहान, ने मुख्य अथिति श्री किरणजीत जी व कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी को पौधे भेंट किये कार्यक्रम बहुत ही शानदार रहा छपरौली व आस पास के गाँव वालों ने पूरा सहयोग दिया।

शहीद परिवारों का हुआ सम्मान

इस अवसर पर छपरौली के पांच शहीद परिवारों को शहीद सम्मान देकर सम्मानित किया गया। परिवार जनों को शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे किरणजीत सिंह, स्वामी आर्यवेश, सहदेव बेधड़क,

कृष्णपाल खलीफा, अवनीश कुमार, संजीव खोखर, श्री ओमपाल आर्य, श्री जयदेव आर्य, श्री राजसिंह आर्य, श्री शिवकुमार आर्य ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम का संचालन मिशन आर्यावर्त के निदेशक दीक्षेन्द्र आर्य व आर्य समाज छपरौली के उप प्रधान योगेंद्र आर्य ने किया। अन्त में कार्यवाहक प्रधान श्री धर्मेन्द्र आर्य ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी आगन्तुक महानुभावों तथा अतिथियों का आभार प्रकट किया।

शहीद के पिता को सम्मानित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी व श्री किरणजीत सिंह जी

समाचार पत्रों के आईने से

शहीदों के सपने अभी अधूरे: किरणजीत सिंह

छपरौली | हमारे संवाददाता

आर्य समाज छपरौली के तत्वावधान में एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम आयोजित किया गया। शहीद भगत सिंह के भतीजे किरणजीत सिंह ने कहा कि अभी शहीदों के सपने अधूरे हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने की। मुख्य अतिथि शहीद-ए-आजम भगत सिंह के भतीजे किरणजीत सिंह रहे। उन्होंने कहा कि आज शहीदों के सपने अधूरे हैं। उनको पूरा करने के लिए आज देश की सरकारों के साथ आम जनमानस को भी अपना सहयोग करना चाहिए। जब तक देश मे ...

शुक्रवार को छपरौली में आयोजित कार्यक्रम में शहीद परिवारों का सम्मान करते अतिथि।

के बीच मे खाई, छोटे बड़े के नाम पर ... क्षेत्रवाद के नाम भेदभाव रहेगा तबतक ...

दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है तो उसके पीछे क्रांतिकारियों का बलिदान है। किरणजीत सिंह ने शहीद-ए-आजम की वो पंक्तियां सुनाई जिसमे उन्होंने क्रांति की व्याख्या की है।

'भगत सिंह कहते है क्रांति से हमारा मतलब वर्तमान व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करना है। क्रांति की मशाल विचारों की शान पर तेज होती है। आज हमें अपने विचारों की मजबूती की आवश्यकता है।' उन्होंने कहा कि क्रांतिकारी किसी परिवार के नहीं वो देश की वे पूरे देश के होते हैं।

स्वामी आर्यवेश ने कहा कि आज युवाओं को याद करना चाहिए। उनके जीवन से प्रेरणा लेने व उनकी विचारधारा ...

षडयंत्र के तहत हमारे क्रांतिकारियों को पीछे धकेला जा रहा है। आयोजन के दौरान आर्य समाज छपरौली के प्रधान कृष्णपाल खलीफा, धर्मेन्द्र पहलवान, पप्पू पहलवान, नरेंद्र, अवनीश, खिलाड़ी सिंह, महक सिंह, धर्मबीर सिंह, राजसिंह, ओमपाल सिंह, जयदेव आर्य, तेजपाल सिंह, योगेन्द्र गिन्दू, वेदप्रकाश आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम में स्वतंत्रता सेनानी चौधरी पृथ्वी सिंह बेधड़क के पुत्र सहदेव बेधड़क ने देश भक्ति गीत सुनाए तथा युवाओं में जोश भरने का कार्य किया। कार्यक्रम का संचालन मिशन आर्यावर्त के निदेशक दीक्षेन्द्र आर्य व आर्य समाज छपरौली के उप प्रधान योगेंद्र आर्य ...

मेरठ
शनिवार, 11 नवंबर 2017
10

शहीदों के सपने अभी अधूरे : किरणजीत

अमर उजाला ब्यूरो

छपरौली (बागपत)।

कस्बे में आर्य समाज छपरौली के तत्वावधान में एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे किरणजीत सिंह रहे। उन्होंने कहा कि शहीदों के सपने अधूरे हैं। इन्हें पूरा करने के लिए सभी लोगों को एक साथ आना होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने की। किरणजीत सिंह ने कहा

शहीदों के सपने पूरे करने के लिए देश की सरकारों के साथ आम जनमानस भी सहयोग करना चाहिए। स्वामी आर्यवेश ने कहा कि शहीदों के बलिदान को कभी भूलना चाहिए। उन्हें जीवन से प्रेरणा लेने और उनकी विचारधारा को जनजन तक पहुंचाने की जरूरत है। आर्य समाज का देश की आजादी में बड़ा योगदान रहा है।

भगत सिंह की तीन पीढ़ियां आर्य समाज से प्रेरित रहीं। दादा ने स्वयं स्वामी दयानंद से यज्ञोपवीत लिया था। आर्य समाज आज भी शहीदों के सपनों को साकार करने आंदोलनरत है। शहीदों के परिजनों को सम्मानित किया गया।

स्वतंत्रता सैनानी चौधरी पृथ्वीसिंह बेधड़क के पुत्र सहदेव सिंह बेधड़क ने देशभक्ति से ओतपोत गीत प्रस्तुत किए। उसे सुनकर श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो गए। इस दौरान मुख्य रूप से पूर्व चेयरमैन संजीव खोखर, आर्य समाज छपरौली के प्रधान कृष्णपाल खलीफा, धर्मेंद्र पहलवान, पप्पू पहलवान, नरेंद्र, अवनीश, खिलारी सिंह, महक सिंह, धर्मवीर सिंह, ओमपाल सिंह, जयदेव आर्य, तेजपाल सिंह, योगेंद्र गिंदू का सहयोग रहा।

छपरौली में आयोजित कार्यक्रम में विचार रखते स्वामी आर्यवेश। अमर उजाला

एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम आयोजित

बड़ौत जागरण

शहीदों के सपने अभी अधूरे : किरणजीत

आर्य समाज छपरौली ने कराया कार्यक्रम शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे और स्वामी आर्यवेश भी पहुंचे

क्रांतिकारियों से प्रेरणा लें युवा: आर्यवेश

शहीदों के सपने पूरे होने में रह गई कमी: किरणजीत

छपरौली में एक शाम शहीदों के नाम पर हुआ कार्यक्रम

● जनवाणी संवाददाता, छपरौली

छपरौली कस्बे में आर्य समाज छपरौली के तत्वावधान में एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने की। कार्यक्रम में अतिथि शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे किरणजीत सिंह रहे। कार्यक्रम में स्वतंत्रता सेनानी चौ. पृथ्वी सिंह बेधड़क के सौपुत्र सहदेव बेधड़क ने देश भक्ति गीत सुनाए तथा युवाओं में जोश भरा। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि शहीदों के सपने अभी पूरे नहीं हो पाए हैं। उनकी शहादत देश के लिए हुई।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे किरणजीत सिंह ने कहा कि आज़ शहीदों के सपने अधूरे हैं। उनको पूरा करने के लिए आज देश की सरकारों के साथ आम जन मानस को भी अपना सहयोग करना चाहिए। जब तक देश में जातिवाद ,साम्प्रदायिकता,अमीर- गरीब के बीच मे खाई, छोटे-बड़े के नाम पर भेदभाव, भाषा के नाम पर भेदभाव, क्षेत्रवाद के नाम भेदभाव रहेगा। तब तक शहीदों के सपने अधुरे हैं। यदि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है तो उसके पीछे क्रांतिकारियों का बलिदान है। किरणजीत सिंह ने शहीदे आजम की वह पंक्तियां सुनाई, जिसमें उन्होंने क्रांति की व्याख्या क। भगत सिंह कहते थे कि क्रांति से हमारा मतलब वर्तमान व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करना है। क्रांति की मशाल विचारों की शान पर तेज होती है। आज हमें अपने विचारों की मजबूती की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि क्रांतिकारी किसी परिवार के नहीं वह पूरे देश के होते हैं। स्वामी आर्यवेश ने कहा कि आज युवाओं को याद करना चाहिए। उनके जीवन से प्रेरणा लेने व उनकी विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने की जरूरत है। षड़यन्त्र के तहत क्रांतिकारियों को पीछे धकेला जा रहा है। आर्य समाज का देश की आजादी में बहुत बड़ा योगदान रहा है। भगत सिंह की तीन पीढियां आर्य समाज से प्रेरित रहीं। भगत सिंह के दादा ज़ी ने स्वयं स्वामी दयानंद जी से यज्ञोपवीत लिया था। आर्य समाज आज भी शहीदों के सपनों को साकार करने आंदोलनरत है। छपरौली के पूर्व चेयरमैन संजीव खोखर ने स्वागत भाषण में सभी अतिथियों का स्वागत किया। कहा कि ऐसे कार्यक्रम ज्यादा से ज्यादा आयोजित होने चाहिए। कार्यक्रम का संचालन मिशन आर्यावर्त्त के निदेशक दीक्षेन्द्र आर्य व आर्य समाज छपरौली के उप प्रधान योगेंद्र आर्य ने किया।

कार्यक्रम की सफलता में आर्य समाज छपरौली के प्रधान कृष्णपाल खलीफा, धर्मेन्द्र भूरा कोच, पप्पू पहलवान, नरेंद्र , अवनीश, खिलाड़ी सिंह, महक सिंह,धर्मवीर सिंह, राजसिंह, ओमपाल सिंह, जयदेव आर्य, तेजपाल सिंह,योगेन्द्र गिन्दू, वेदप्रकाश आदि मौजूद रहे।

शहीद परिवारों का सम्मान किया गया

छपरौली: छपरौली के पांच शहीद परिवारों को शहीद सम्मान देकर सम्मानित किया। परिवार जनों को शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे किरणजीत सिंह, स्वामी आर्यवेश, सहदेव बेधड़क, कृष्णपाल खलीफा, अवनीश कुमार, संजीव खोखर ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

छपरौली में शहीद परिवारों को सम्मानित करते अतिथि। ■ फोटो: जनवाणी

सम्मानित किये गये शहीदों का संक्षिप्त परिचय

जीन्द चलो! ओ३म् जीन्द चलो!!

स्वामी श्रद्धानन्द व पं. रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान स्मृति में,
कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, भ्रष्टाचार एवं

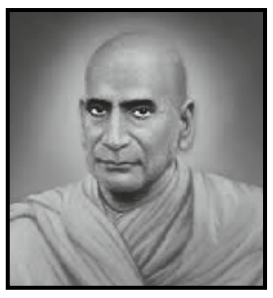

धार्मिक पारवण्ड के विरुद्ध

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जीन्द

दिनांक : 10 दिसम्बर, 2017, प्रातः 10 बजे से

स्थान : महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम, 3705 अर्बन अस्टेट, जीन्द, हरियाणा

इस सम्मेलन में स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, स्वामी ओमवेश जी पूर्व गन्ना विकास मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली, स्वामी चन्द्रवेश जी टिटौली, स्वामी श्रद्धानन्द जी पलवल, स्वामी विजयवेश जी गुड़गांव, स्वामी हरिदत्त उपाध्याय गुरुकुल लाढ़ौत, रोहतक, श्री सत्यव्रत सामवेदी जयपुर, प्रो. विट्ठलराव आर्य आन्ध्र प्रदेश, श्री बिरजानन्द आर्य राजस्थान, प्रो. श्योताज सिंह दिल्ली, श्री राम मोहन राय एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, राजकुमार गुप्ता एडवोकेट चण्डीगढ़, चौ. हरिसिंह सैनी पूर्व मंत्री हिसार, दर्शनाचार्या कन्या गुरुकुल खरल, चौ. बदलूराम, प्रधान आर्य समाज नागौरी गेट हिसार, बजरंग लाल आर्य हिसार, आचार्य सन्तराम रोहतक, लाजपत राय चौधरी, करनाल, चौधरी सूबे सिंह रोहतक, प्रकाशवीर विद्यालंकार रोहतक, बलबीर शास्त्री रोहतक, राजेन्द्र सिंह बिसला पूर्व विधायक, चौ. अजीत सिंह पूर्व विधायक, अतर सिंह आर्य वानप्रस्थी, चौ. बलवन्त सिंह आर्य सीसर खरबला, चौ. मेलाराम दिवाल कैथल, दर्शन सिंह आर्य कैथल, जगदीश सर्राफ भिवानी, डॉ. भूप सिंह भिवानी, लक्ष्मीचन्द आर्य फरीदाबाद, रामलाल आर्य गुड़गांव, महेन्द्र शास्त्री गुड़गांव, मोहित आर्य यमुनानगर, इन्द्रजीत आर्य प्रधान आर्य समाज नरवाना, जगदीश सींवर, सिरसा, जयपाल सिंह मलिक एनवाईके, प्रो. यशवीर शास्त्री, प्रिं. आजाद सिंह आर्य, चौ. सुभाष श्योराण इण्डस ग्रुप, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्रीमती जगमती मलिक आर्या, कुमारी प्रवेश आर्या, कुमारी पूनम आर्या, प्रसिद्ध भजनोपदेशक सहदेव सिंह बेधड़क, कुलदीप आर्य बिजनौर, हवा सिंह तूफान, सुनील शास्त्री उचाना आदि भजनोपदेशक, संन्यासी व नेता आमंत्रित किये गये हैं। भारी संख्या में पहुंचकर विद्वान वक्ताओं के विचार सुनें व धर्म लाभ उठायें।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आप सभी इष्ट मित्रों व परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं। संगठन का परिचय देते हुए भारी संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें। कम से कम एक वाहन साथियों से भरकर जरूर लायें।

संयोजक : स्वामी रामवेश, प्रधान नशाबंदी परिषद् हरियाणा
9416148278, 01681—248638

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर राष्ट्र सद्भावना यज्ञ

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस आर्य समाज फोर्ट गोलनाड़ी में समारोह पूर्वक मनाया गया। उम्मेदसिंह आर्य ने बताया कि शारदीय नवश्रेष्ठी यज्ञ जिसमें 21 यजमान जोड़ो और 101 आर्य जनों द्वारा राष्ट्र सद्भावना व समृद्धि के लिए आर्य समाज फोर्ट के पुरोहित विक्रमसिंह आर्य ने विशेष वैदिक मंत्रों द्वारा आहुति दिलवाई जब वैदिक मंत्रों द्वारा आहुति लग रही थी तब वातावरण रोचक और रोमांचित हो रहा था। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् आर्य वीरदल जोधपुर के संचालक उम्मेद सिंह आर्य ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण के प्रसंगों को बताकर समारोह के दूसरे भाग प्रवचन उद्बोधन को प्रारम्भ किया। समारोह के मुख्य वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा जोधपुर के प्रधान रामसिंह आर्य ने यज्ञ के संकल्प की व्याख्या करते हुए बताया कि किसी भी सफल कार्य के सम्पादन के लिए यज्ञ वेदी पर संकल्प लिया जाता है, वहीं कार्य पूर्ण होता है और राष्ट्र व समाज के कल्याण के लिए होता है। संकल्प का

उदाहरण क्रांतिकारी भगतसिंह और विश्वामित्र ने यज्ञ वेदी पर मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र व लक्ष्मण का प्रण। उन्होंने यज्ञ संस्कृति को राष्ट्रव्यापी करने का संकल्प करवाया। जब सरदार अर्जुन सिंह ने भगत सिंह को आजादी के आन्दोलन के लिए समर्पित करवाया था। इस प्रकार कई उदाहरण देकर यज्ञ के संकल्प को समझाने का प्रयास किया। उपप्रधान नारायण सिंह आर्य ने वैदिक प्रश्नोत्तरी विजेता आर्यवीरों, विरांगनाओं को पुरस्कृत किया, मदनलाल तंवर ने कविता पाठ कर वातावरण को यज्ञमय बना दिया। आर्य वीर दल राजस्थान के संचालक भंवरलाल आर्य ने यजमानों व आर्य वीरों का स्वागत कर धन्यवाद दिया।

इस समारोह के अवसर पर जितेन्द्र सिंह, गणपत सिंह, हरिसिंह आर्य, राकेश कपूर, चांदमल आर्य, विरूमल आर्य, डॉ. लक्ष्मणसिंह, राजेन्द्र सिंह चौहान, शैलेन्द्र सिंह तंवर, मदन गोपाल आर्य, सोभाग सिंह, पूनाराम, अशोक आर्य, चैनाराम, महेश आर्य, सावित्री आर्य, कविता आर्य, भावना सोलंकी, अंकिता तंवर आदि आर्य वीर वीरांगनाएँ एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

— उम्मेद सिंह आर्य, मंत्री, आर्य समाज फोर्ट रोड, महर्षि दयानन्द आश्रम, जोधपुर (राजस्थान)

आर्य उपप्रतिनिधि सभा हरिद्वार (उत्तराखण्ड) के तत्वावधान में आयोजित विशाल आर्य महासम्मेलन सफलता के साथ सम्पन्न

देवभूमि उत्तराखण्ड प्रान्त को नशामुक्त बनाया जाये

– स्वामी आर्यवेश

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आर्य समाज को कटिबद्ध होना पड़ेगा

– स्वामी यतीश्वरानन्द

संघर्ष एवं आन्दोलन किये बिना समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता
– सुमन्त सिंह आर्य

देश को नई दिशा देने के लिए आर्य समाज संगठित होकर कार्य करे
– स्वामी यज्ञमुनि

स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, हरिद्वार के तत्वावधान में डी.ए.वी. इण्टर कालेज भगवानपुर, तहसील–रुढ़की के प्रांगण में 11 व 12 नवम्बर, 2017 को आयोजित विशाल आर्य महासम्मेलन सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। इस महासम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, हरिद्वार ग्रामीण क्षेत्र के यशस्वी विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी यज्ञमुनि जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी आदि के अतिरिक्त स्थानीय विधायक श्रीमती ममता राकेश, श्रीमती मंजू अधिशासी अभियन्ता, मास्टर सुमन्त सिंह आर्य, कुंवर राजपाल आर्य भजनोपदेशक, श्री रमेश चन्द्र निश्चिंत आर्य भजनोपदेशक, श्री धर्म सिंह आर्य भजनोपदेशक, कुमारी निकिता आर्या, मनीता आर्या आदि ने महासम्मेलन में सम्मिलित होकर जनता को सम्बोधित किया।

इस दो दिवसीय आर्य महासम्मेलन का शुभारम्भ 11 नवम्बर को प्रातः यज्ञ से किया गया। तत्पश्चात् क्रांतिकारी आर्य संन्यासी स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज विधायक (हरिद्वार ग्रामीण क्षेत्र) के कर–कमलों द्वारा ध्वजारोहण हुआ इसके पश्चात् भगवानपुर कस्बे में विशाल शोभा यात्रा निकालकर गली–गली को गगनभेदी नारों से गुंजा दिया गया। शोभायात्रा का नेतृत्व श्री स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने किया तथा स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी यज्ञमुनि जी, प्रान्तीय सभा के क्रांतिकारी प्रधान श्री मानपाल सिंह राठी, सभा के मंत्री श्री दिनेश कुमार आर्य, श्री पवन आर्य, जिला सभा के प्रधान श्री हाकम सिंह आर्यवंशी, मंत्री श्री आर्य हरपाल सिंह सैनी, कोषाध्यक्ष श्री जयप्रकाश आर्य, श्री धनीराम सैनी, डॉ. रामपाल आर्य, श्री इन्द्रराज आर्य, श्री महक सिंह आर्य (समस्त उपप्रधान), श्री तेलूराम आर्य प्रचारमंत्री, श्री वेदपाल आर्य, श्री अशोक आर्य, श्री पुष्पेन्द्र आर्य, श्री जिलेराम आर्य एवं कुमारी श्रद्धा आर्या (सभी उपमंत्री) आदि महानुभाव शोभायात्रा में ओ३म् ध्वज लेकर नारे गुंजाते हुए चल रहे थे। यात्रा में सैकड़ों वाहन और हजारों आर्यजन सम्मिलित हुए।

इस दो दिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने आह्वान किया कि समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों के विरुद्ध आर्यजन प्रतिबद्ध हो जायें और प्रचण्ड अभियान शुरू करें। स्वामी जी ने नशाखोरी, अश्लीलता, धार्मिक अन्धविश्वास, कन्या भ्रूण हत्या एवं जाति–पांति के विरुद्ध कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज प्रारम्भ से ही विभिन्न सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध कार्य करता आया है जिसकी वर्तमान में और अधिक आवश्यकता है। स्वामी यज्ञमुनि जी ने आर्य समाज में चल रहे विघटन पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सुझाव दिया कि किसी भी बुराई से लड़ने के लिए आर्य समाज का संगठित होना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए यदि बड़े से बड़ा

त्याग भी करना पड़े तो उससे नेताओं को पीछे नहीं हटना चाहिए। उन्होंने आर्यजनों को अपने आचरण को आर्य समाज की मान्यताओं के अनुरूप बनाने पर भी बल दिया। जिला सभा के संरक्षक और भीष्म पितामह के रूप में प्रतिष्ठित वयोवृद्ध लेखक, विद्वान् एवं किसान नेता मास्टर सुमन्त सिंह आर्य ने अपनी दर्द भरी आवाज में आह्वान किया कि जब तक आर्य समाज संघर्ष तथा आन्दोलन का रास्ता नहीं अपनायेगा किसी भी समस्या का समाधान होना सम्भव नहीं है। उन्होंने राजनैतिक नेताओं को चालाक एवं नकली आंसु बहाने वाले बताया। उन्होंने किसानों एवं गरीबों पर होने वाले जुर्म तथा अत्याचार के विरुद्ध आर्य समाज को आन्दोलन करने की सलाह दी। विदित हो कि श्री सुमन्त सिंह आर्य कई बार किसानों की समस्याओं को लेकर भूख हड़ताल कर चुके हैं और जेल भी जा चुके हैं।

यात्रा का नेतृत्व करते हुए हरिद्वार ग्रामीण के विधायक आर्य संन्यासी स्वामी यतीश्वरानन्द जी

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के छठे नियम की विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा निर्धारित आर्य समाज के 10 नियमों में छठा नियम आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य को दर्शाता है। उसके अनुसार संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है और उपकार का क्रम शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति है। महर्षि ने संसार के उपकार के लिए शारीरिक उन्नति को पहले स्थान पर रखते हुए स्पष्ट किया है कि जब–तक पूरे विश्व के लोगों को भोजन, वस्त्र, आवास, पढ़ाई और न्याय उपलब्ध नहीं होगा तब तक उनकी शारीरिक उन्नति नहीं हो सकती। अतः आर्य समाज को वे सारे प्रयास करने आवश्यक हैं जिनसे मनुष्य मात्र को उपरोक्त छः मौलिक अधिकारों से वंचित न रखा जाये। शारीरिक उन्नति के बाद आत्मिक उन्नति भी परम आवश्यक है। क्योंकि आत्मिक उन्नति के द्वारा ही सामाजिक उन्नति सम्भव है। ये दोनों अन्योन्याश्रित हैं। जिस व्यक्ति में आत्मिक उन्नति होगी वह दुनिया के प्रत्येक मनुष्य एवं अन्य प्राणियों में अपने जैसी आत्मा एवं परमात्मा का वास अनुभव करेगा और वह किसी के प्रति द्वेष, घृणा, नफरत एवं हिंसा का भाव नहीं रखेगा। इससे पूरा समाज उन्नति की तरफ अग्रसर होगा। सभी लोग एक दूसरे की उन्नति में अपनी उन्नति समझने लगेंगे और विविध संकीर्णताओं के कारण परस्पर विद्वेष एवं टकराव से जूझ रहा समाज परस्पर सौहार्द एवं सद्भावना से ओत–प्रोत हो जायेगा। महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज का यह वैश्विक दृष्टिकोण एवं वैश्विक कार्यक्रम आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य के रूप में निर्धारित किया है। अतः आर्यों के लिए उचित है कि हम मानव मात्र की भलाई के लिए कार्य करें और आम जनता को अपने इस उदार चरित्र से अवगत करायें। आर्यों का उद्देश्य वसुधैव कुटुम्बकम् को चरित्रार्थ करना है।

अयं निजः प्रोवेति गणना लघु चेतसाम्।
उदार चरितानामतु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अर्थात् यह मेरा है, यह पराया है ऐसी मानसिकता संकीर्ण हृदय वालों की होती है। उदार हृदय वाले लोग पूरी पृथ्वी पर रहने वाले लोगों को एक परिवार के रूप में देखते हैं। इतना विशाल दृष्टिकोण सम्भवतः विश्व के किसी महापुरुष एवं किसी मत–सम्प्रदाय का नहीं है। जितना महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य में दर्शाया है। स्वामी आर्यवेश जी ने समाज की उन्नति में बाधक नशाखोरी के विरुद्ध जोरदार आवाज उठाई और उन्होंने कहा कि जब तक देवभूमि उत्तराखण्ड प्रान्त को नशामुक्त नहीं बना देंगे तब तक आर्य समाज नशे के विरुद्ध आन्दोलनरत रहेगा। उन्होंने सभी आर्यजनों से मिलकर कार्य करने की अपील की और संगठित होकर समाज के ज्वलन्त मुद्दों पर कार्य करने का आह्वान किया।

इस आर्य महासम्मेलन के आयोजन में जिला सभा के प्रधान श्री हाकम सिंह आर्यवंशी एवं मंत्री आर्य हरपाल सिंह सैनी ने अपने सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी के सदस्यों के सहयोग से अथक परिश्रम किया और सम्मेलन को सफल बनाया।

विश्व को सत्यार्थ प्रकाश से आप्लावित करने के संकल्प के साथ उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव सम्पन्न

वेद में सभी समस्याओं का समाधान है – गुलाबचन्द कटारिया

वेद ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश को आद्योपान्त पढ़ना अत्यन्त आवश्यक

– स्वामी आर्यवेश

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी उद्‌बोधन देते हुए

बीसवें सत्यार्थ प्रकाष महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में अपने उद्‌बोधन में गृहमंत्री, राजस्थान सरकार श्री गुलाबचन्द कटारिया ने कहा कि वेद के ज्ञान से वैश्विक समस्याएं जैसे आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अनाचार मिटाकर मानवता का कार्य किया जा सकता है। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय महोत्सव के प्रथम सत्र वेद सम्मेलन में श्री कटारिया ने मेवाड़ की गौरवमयी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं संस्कृति में महर्षि देव दयानन्द सरस्वती के उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन के सम्पूर्ण करने को एक महत्वपूर्ण हिस्सा बताया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली द्वारा की गई। उन्होंने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि सत्यार्थ प्रकाश वेद ज्ञान की ओर जन जन को प्रवृत्त करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने नई पीढ़ी को आर्य संस्कृति से जोड़ने हेतु रचनात्मक सुझाव दिए।

स्वामी जी ने कहा कि भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा एवं समग्र क्रांति के महानायक महर्षि दयानन्द सरस्वती के कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का अपने युग पर तथा परवर्ती युगों पर जो प्रभाव पड़ा वह अत्यन्त विलक्षण ही नहीं चमत्कारी भी रहा।

स्वामी सुमेधानन्द जी
सांसद, सीकर, राजस्थान

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर देश–विदेश के करोड़ों लोगों ने अपने परम्परागत पंथ, मजहब, सम्प्रदाय का परित्याग कर आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण की। महर्षि का एक ही आह्‌वान था कि 'वेदों की ओर लौटो' और मानव समाज का पुनरूद्धार करो। क्योंकि वेद ही धर्म का मूल और मानव सभ्यता तथा संस्कृति के उद्‌गम स्रोत हैं। अतः वेद विरुद्ध कोई भी सिद्धान्त, परम्परा, प्रथा, विश्वास तथा कार्य महर्षि दयानन्द को अमान्य था। सत्यार्थ प्रकाश के पूर्वार्द्ध के दस समुल्लासों में उन्होंने जहां वेदों का औचित्य सिद्ध किया है वहीं उत्तरार्द्ध के चार समुल्लासों में उन्होंने विविध पंथों, सम्प्रदायाओं, मजहबों का अनौचित्य भी सिद्ध किया है। सत्यार्थ प्रकाश ही स्वामी दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज की समग्रता का द्योतक है।

स्वामी जी ने कहा कि मेरा मानना है कि वेदादि सद्‌ग्रन्थों का स्वाध्याय करने से पूर्व व्यक्ति को सत्यार्थ प्रकाश का आद्योपान्त अध्ययन करना चाहिए। क्योंकि वेद अत्यन्त उच्च स्तर के ग्रन्थ हैं और परमात्मा की वाणी है। अतः उसे बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से समझने के लिए पहले सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्राथमिक स्तर पर धर्म के गूढ़ रहस्यों को तथा उससे सम्बन्धित अन्य विचारों को अत्यन्त सरल शैली में सत्यार्थ प्रकाश में स्थान दिया है। क्योंकि प्राथमिक शिक्षा ग्रहण किये बिना एकदम से उच्च स्तर का ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज की सभाएँ तथा उससे सम्बन्धित संस्थाएँ भारी मात्रा में सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित करें और आम जनता को उसे पढ़ने के लिए अत्यन्त अल्प मूल्य में वितरित करें। क्योंकि आर्य समाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों को समझने के लिए सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन–मनन करना अत्यन्त आवश्यक है।

स्वामी जी ने सुझाव देते हुए आह्‌वान किया कि यदि सारे देश में अत्यधिक बड़े स्तर पर सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाएँ आयोजित की जायें तो बच्चे, युवक और आमजन सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने के लिए कटिबद्ध हो सकते हैं। परीक्षाओं में सफल होने वाले परीक्षार्थियों को अच्छे आकर्षक पारितोषिक दिये जाने चाहिए जिससे आकृष्ट होकर हर स्तर के व्यक्ति इन परीक्षाओं में भाग लेंगे। पारितोषिक प्राप्त करने के लिए बच्चे, युवा तथा आम जनता सत्यार्थ प्रकाश को आद्योपान्त पढ़ेगी और यही हमारा उद्देश्य है। जब तक आमजन, बच्चे, युवा सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ेंगे नहीं तब तक आर्य समाज की विचारधारा को अपनायेंगे कैसे? स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में सबसे बड़ी आवश्यकता जन–जन तक सत्यार्थ प्रकाश पहुँचाने की है और महर्षि द्वारा प्रदत्त विचारों को प्रचारित करने की है। स्वामी आर्यवेश जी ने यह भी स्पष्ट किया कि सत्यार्थ प्रकाश में संशोधन करके महर्षि दयानन्द द्वारा प्रकाशित द्वितीय संस्करण को परिवर्तित किया जा रहा है जो किसी भी दृष्टि से सही नहीं है। अतः सभी प्रकाशक द्वितीय संस्करण को ही छापें अन्य को नहीं।

वेद सम्मेलन के मुख्य वक्ता अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आचार्य वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि वेदों की शिक्षा द्वारा संस्कारवान एवं चरित्रवान नागरिक निर्मित किए जा सकते हैं। उन्होंने काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि वासनाओं को नष्ट करने का आधार वेदों का ज्ञान बताया। वेद मार्ग द्वारा ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

वेद मार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक ने वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है, विषय पर प्रमाणिक व्याख्यान देते हुए कहा कि विश्व के एनसाइक्लोपीडिया में भी विश्व स्तर पर वेदों को प्राचीनतम ग्रन्थ के रूप में सम्मानीय स्थान दिया गया है। वेद ही सभी भाषाओं की जननी है, मूल स्रोत है।

आचार्य श्री वेदप्रिय जी शास्त्री, सीताबाड़ी ने बताया कि वेद

स्वामी प्रणवानन्द जी
संचालक गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली

में सब सत्य विद्याएं बीज रूप में उपस्थित हैं। आरम्भ में वेद सम्मेलन में न्यास के मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने स्वागत उद्‌बोधन में कहा कि महर्षि देव दयानन्द सरस्वती की यह कर्मस्थली अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्यावर्त चित्रदीर्घा, सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ एवं सत्यार्थ सौरभ पत्रिका के माध्यम से विशेष स्थान रखती है।

दयानन्द कन्या विद्यालय, हिरणमगरी, उदयपुर की छात्राओं ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। रूड़की से आये भजनोपदेशक श्री कल्याण वेदी ने मन को झंकृत करने वाली वाणी से भजन प्रस्तुत किए। सत्र का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। आभार महोत्सव के संयोजक डॉ. अमृत लाल तापड़िया ने व्यक्त किया। विशिष्ठ अतिथि के रूप में श्री लोकेश द्विवेदी, उप महापौर, नगर निगम का भी सानिध्य समारोह में प्राप्त हुआ।

यह महोत्सव शनिवार को प्रातः 7.15 बजे यज्ञ के साथ आरम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा वेद मार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक ने आध्यात्मिक प्रवचन में यज्ञ द्वारा पर्यावरण सन्तुलन के महत्व पर प्रकाश डाला। संयोजन श्री इन्द्रप्रकाश यादव ने किया।

विशेष सत्र में जादूगर राज तिलक ने अन्ध विश्वास पर प्रहार करते हुए रोचक जादू प्रस्तुत किए। इस सत्र 'ढोल की पोल' के अध्यक्ष श्री मोती लाल आर्य, प्रधान, आर्य समाज, आबूरोड रहे। इस

आचार्य सोमदेव शास्त्री जी
अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई

सत्र में प्रमुख सानिध्य श्री चक्रकीर्ति सामवेदी, मंत्री, आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर का मिला। इस विशेष सत्र 'ढोल की पोल' का संचालन न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने किया। श्री अशोक आर्य ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश ने वर्तमान में फैल रहे अन्धविश्वासों के निर्मूलन के लिए वैज्ञानिक तर्कों के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज सुधार का एक महत्वपूर्ण कार्य किया है।

न्यास के बीसवें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का शुभारम्भ ध्वजारोहण के साथ प्रातः हुआ। पद्‌मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौडगढ़ के अधिष्ठाता स्वामी डॉ. ओम् आनन्द सरस्वती ने ध्वजारोहण किया। ध्वज गीत श्री सुधाकर पीयूष ने प्रस्तुत किया। महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतहनगर की छात्राओं ने असि प्रस्तुति करते हुए मेवाड़ की शौर्य, पराक्रम की संस्कृति की एक झलक प्रस्तुत की। इसका संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

इस महोत्सव में देश–विदेश से अनेक आर्यजन उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। कई आर्ष ग्रन्थों एवं विशेष स्वदेशी उत्पादों की स्टॉल के साथ मेला भी लगा। प्रातः 7.15 बजे से सायं 7.00 बजे तक प्रतिदिन यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों का क्रम 6 नवम्बर तक जारी रहा।

अगले पृष्ठ पर जारी है

पृष्ठ–5 का शेष

उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज की राष्ट्र रक्षा एवं राष्ट्र कल्याण में अहम भूमिका है

– श्री सुरेश चन्द्र आर्य

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान एवं न्यास के न्यासी श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज की राष्ट्र रक्षा एवं राष्ट्र कल्याण में अहम भूमिका है। इस अवसर पर आर्य समाज, भीलवाड़ा के प्रधान एवं न्यास के उपाध्यक्ष श्री विजय शर्मा ने आह्वान किया कि वेदों के ज्ञान से नई पीढ़ी अपने चरित्र को उत्तम बनाकर राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बने। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के महामंत्री श्री विनय आर्य ने हमारे देश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का संदर्भ देते हुए कहा कि हमारे देश की वर्षों की गुलामी का मुख्य कारण वेदों से दूर होना है।

दिल्ली से आये अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने राष्ट्र रक्षा और उसके संदर्भ में वैदिक चिन्तन पर मार्मिक प्रवचन प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज देश के लिए मर मिटने वाले नौजनवानों की आवश्यकता है। शिक्षा में न केवल शिक्षकों बल्कि माता पिता को भी बच्चों को संस्कारित करने की आवश्यकता है। इस हेतु विद्यालयी पाठ्यक्रमों में शिष्टाचार, संस्कार, नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्र भक्ति के पाठ सम्मिलित किए जाने चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन के अध्यक्षीय उद्बोधन में सीकर से सांसद एवं न्यास के न्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से समस्त भ्रान्तियाँ दूर हो जाती हैं। अतः सत्यार्थ प्रकाश को जन–जन तक पहुंचाना है। आरम्भ में गुरुकुल पौंधा देहरादून के आचार्य श्री धनंजय जी ने परिवार के निर्माण में सत्यार्थ प्रकाश के महत्व पर प्रकाश डाला एवं कहा कि जब परिवारों में सत्यार्थ प्रकाश उपस्थित न होने के कारण ही एकल परिवार एवं परिवारों में विघटन हो रहा है।

वैदिक मिशन, मुम्बई के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव जी शास्त्री ने सत्यार्थ प्रकाश एवं अध्यात्म विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सत्यार्थ प्रकाश में 377 ग्रन्थों के प्रमाण है। महर्षि देव दयानन्द सरस्वती को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि सत्यार्थ प्रकाश का अधिकाधिक प्रचार किया जाए ताकि उससे प्रेरणा लेकर राष्ट्र एवं समाज का कल्याण हो सकेगा। दयानन्द मठ, दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द सरस्वती ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश एक जादू है। मन, वचन, कर्म से इसे जीवन में उतार कर सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। पूर्व आई.पी.एस. डॉ. आनन्द कुमार जी ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें वेद, दर्शन, उपनिषद, सृष्टि उत्पत्ति, योग, सोलह संस्कार, अन्ध विश्वास निर्मूलन, सभी मत–मतान्तरों की व्याख्या वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ समाहित है। वैदिक वैज्ञानिक आचार्य अग्निव्रत नैष्टिक ने उद्घाटित किया कि उन्होंने नोबल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिकों को वैज्ञानिक आधार पर चुनौती दी है और वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है कि वे आचार्य जी के प्रश्नों के उत्तर देने में समर्थ नहीं हैं।

राजीव गांधी जनजाति विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री टी. सी. डामोर ने कहा कि सम्पूर्ण विश्व की मानव जाति आज खतरे में है। जन जन को संस्कारित करने हेतु आर्य समाज एवं सत्यार्थ प्रकाश का महत्वपूर्ण योगदान है। मुख्य अतिथि लोकायुक्त, राजस्थान न्यायमूर्ति श्री एस.एस.कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सत्यार्थ प्रकाश के ज्ञान को आचरण में उतारने की आवश्यकता है। उनके जीवन में जो कुछ भी श्रेष्ठ है उनका सारा श्रेय उन्होंने दयानन्द सरस्वती को दिया। राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली के अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह ने आह्वान किया कि सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से पाखण्डों का खण्डन किया जाये। आर्ष गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली के अधिष्ठाता स्वामी प्रणवानन्द जी ने आशीर्वचन में सभी को आश्वस्त किया कि यदि सत्यार्थ प्रकाश एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी को पढ़ लिया जाये तो जीवन में कभी हताशा निराशा नहीं आ सकती है। श्री अशोक आचार्य, श्री कल्याण वेदी एवं श्री भीष्म ने प्रभु भक्ति के सुमधुर भजन प्रस्तुत किए।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का संयोजन श्री सत्यप्रिय शास्त्री एवं सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन का संयोजन श्री जीववर्द्धन शास्त्री ने किया। रात्रि को न्यास के माता लीलावन्ती सभागार में महापुरुषों की जीवनी पर रोक चलचित्र की प्रस्तुति का संयोजक श्री नवनीत आर्य ने किया।

प्रातः न्यास की यज्ञशाला में आयोजित हुए यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. सोमदेव जी शास्त्री ने वैदिक संध्या की सारगर्भित व्याख्या करते

हुए प्रत्येक श्वांस–प्रश्वास के साथ प्रभु स्मरण करने का आध्यात्मिक प्रवचन दिया। यज्ञानुष्ठान का संयोजन श्री इन्द्रप्रकाश ने किया। महोत्सव के संयोजक प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने आभार की रस्म अदा की।

न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने इस अवसर पर बताया कि गुलाब बाग स्थित नवलखा महल में महापुरुषों की जीवनी एवं महर्षि के जीवन पर आधारित चित्रदीर्घा को देश विदेश के गुलाब बाग भ्रमण हेतु आने वाले पर्यटक बड़ी रूचि से देखते हैं एवं हमारी संस्कृति से परिचित होते हैं। नवलखा महल में प्रतिदिन सायं यज्ञ, योग एवं वैदिक साहित्य विक्रय हेतु उपलब्ध रहता है। सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के वैदिक विद्वान एवं देश विदेश के संन्यासीगण एवं आर्यजनों के साथ साथ विद्यार्थियों के समूह भी सम्मिलित होकर वैदिक संस्कृति से परिचित एवं प्रेरित हो रहे हैं।

मनुर्भवः वेद मार्ग पर चलकर ही संभव है

–डॉ. गायत्री पंवार

महिला सम्मेलन में डॉ. गायत्री पंवार, जयपुर की वैदिक विदुषी एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर ने अपने उद्बोधन में कहा कि वेद का ओदश है मनुर्भवः। वेद मार्ग पर चलकर ही संभव है। वेद में दिए गए आचार विचार, व्यवहार, संस्कार के ज्ञान से ही हम श्रेष्ठ मनुष्य बन सकते हैं। डी.आई.जी. जेल प्रशासन डॉ. प्रीता भार्गव ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि पुरुष दो नजरिये रखता है। उसकी

सोच अपनी मां, बहिन और पुत्री के लिए रक्षक की होती है जबकि अन्य महिलाओं के लिए अलग। स्त्री एवं पुरुष एक दूसरे के पूरक बनकर के परिवार और समाज के लिए सुख, शांति एवं समृद्धि ला सकते हैं। पूर्व आई.पी.एस. दिल्ली डॉ. आनन्द कुमार ने कहा कि महाभारत के बाद महर्षि देव दयानन्द सरस्वती पहले व्यक्ति थे जिन्होंने महिलाओं को पुरुष की बराबरी का दर्जा दिया। दिल्ली से आये वैदिक विद्वान एवं लेखक डॉ. देव शर्मा ने 'नारी परिवार की धुरी' विषय पर बोलते हुए कहा कि माता निर्मात्री होती है यदि जीजा बाई नहीं होती तो उनके पुत्र छत्रपति शिवाजी के रूप में नहीं होते। वेद कहता है बुराईयों के सहस्रों महिषासुरों का मारने की शक्ति नारी रखती है। हमें भोजन करवाने वाली मां, पत्नी, बहिन, पुत्री को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिए। अजमेर के पूर्व सांसद एवं प्रधान आर्य समाज, अजमेर श्री रासासिंह रावत ने कहा कि वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषियाँ शास्त्रार्थ किया करती थी तब सर्वत्र समृद्धि थी। माँ का कर्ज कोई नहीं चुका सकता। आर्ष गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के अधिष्ठाता स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा कि हम संकल्प लें कि अपने घर परिवार में बेटों की भांति ही बेटियाँ के साथ भी एक जैसा व्यवहार शिक्षा, धन सम्पत्ति आदि सभी क्षेत्रों में करेंगे। रेवाड़ी से आई साध्वी पुष्पा सरस्वती ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि नारी को शास्त्र और शास्त्र दोनों में पारंगत होकर आत्म विश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्हें अपनी रक्षा हेतु शास्त्र, परिवार व समाज की समृद्धि के लिए शास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए। महिला सम्मेलन का संचालन आर्य समाज, हिरणमगरी,उदयपुर की मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने किया। प्रातःकालीन यज्ञ अनुष्ठान में डॉ. देव शर्मा ने आध्यात्मिक प्रवचन में अग्नि की भांति सतत ऊर्जावान एवं ऊपर उठने की प्रेरणा दी।

बच्चों को कठपुतली प्रदर्शन एवं चलचित्र के माध्यम से वैदिक संस्कृति से परिचित करवाने हेतु भी सत्र आयोजित किए गए जिनका संचालन श्री संजय शाडिल्य एवं श्री नवनीत आर्य ने किया।

अन्ध विश्वास निर्मूलन के सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन में राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह ने आह्वान किया कि मूर्ति पूजा, पाखण्ड आदि अन्ध विश्वासों के कारण हमारे देश को विदेशी आक्रान्ताओं से लेकर ब्रिटिश साम्राज्य तक ने हमारे देश को आर्थिक एवं राजनीतिक भुगतनी पड़ी। नई पीढ़ी को राजधर्म की भावना से प्रेरित करके हम पुनः राष्ट्र के उत्थान हेतु अग्रसर हों। अमेठी से पधारे वैदिक विद्वान डॉ. ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने वैज्ञानिक आधार पर हमारे देश में फैले अन्ध विश्वास एवं सभी सामाजिक बुराईयों को दूर करने हेतु मार्ग प्रशस्त किया है। आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई के महामंत्री श्री अरूण जी अब्रोल ने अपने उद्बोधन में कहा कि जब बालक मूलशंकर ने महाशिवरात्रि की मध्य रात्रि को अपने घर के शिव मंदिर में शिवलिंग पर चूहों को उछल कूद करते देखा तो वहीं से उनमें सच्चे शिव की तलाश हेतु जिज्ञासा जाग्रत हुई। वही मूलशंकर सच्चे शिव की तलाश में सफल रह महर्षि देव दयानन्द सरस्वती के रूप में राष्ट्र एवं समाज के कल्याण के लिए प्रेरणा बने। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द बाल विद्यालय, भीलवाड़ा के विद्यार्थियों ने जादू टोने, ताबीज, झाड़ फूंक करने वाले पाखण्डियों की पोल खोलते हुए रोचक प्रस्तुति दी। महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतहनगर के विद्यार्थियों ने पौराणिक पंडित और आर्य समाजी पुरोहित के प्रेरक के संवादों के माध्यम से विभिन्न मूल्यों पर बिक्री होने वाली मूर्तियों, मंदिर में चोरी हो जाने आदि रोचक घटनाक्रमों के माध्यम से प्रस्तुति देते हुए संदेश दिया कि यज्ञ, स्वाध्याय, सेवा, सदाचार का वैदिक मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ है। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, उदयपुर के विद्यार्थियों ने नीम्बू, मिर्ची के दो पहिया वाहन, ट्रक, दूकान आदि में लगाकर टोटका किए जाने के अन्धविश्वास पर मुकाभिनय के माध्यम से यह संदेश दिया कि पुरुषार्थ से ही प्रगति की जा सकती है। आरम्भ में प्रज्ञा चक्षु बाला अनुराग, बिजनौर के भजनोपदेशक भीष्म, रूड़की के कल्याण वेदी एवं ब्यावर के अमर सिंह ने भजन प्रस्तुत किये महोत्सव के समापन समारोह में न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि इस महोत्सव ने वैदिक संस्कृति से जन–जन को परिचित करवा राष्ट्र भक्ति, महिला सशक्तीकरण एवं अन्ध विश्वास निर्मूलन में सार्थक भूमिका निभाई ही है साथ ही महर्षि देव दयानन्द सरस्वती के कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को घर घर में पहुंचाने में कारगर सिद्ध हुआ है। संयुक्त मंत्री डॉ. अमृत लाल तापड़िया ने आभार व्यक्त किया। सत्र का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

मुझे आश्रय दो

य आपिर्नित्यो वरुण प्रियः सन् त्वां आगांसि कृणवत्सखा ते।
मा त एनस्वन्तो यक्षिन् भुजेम यन्धि ष्मा विप्रः स्तुवते वरूथम्।।

—ऋ० ७/८८/६

ऋषिः—वसिष्ठः।। देवता—वरुणः।। छन्दः—निचृत्त्रिष्टुप्।।

विनय—हे जगदीश्वर ! यह जीव तुम्हारा सनातन बन्धु है, यह तुमसे पृथक नहीं हो सकता। जीव चाहे कितना पतित हो जाए, वास्तव में तो यह स्वरूपतः चेतन आत्मा ही है। इस जीवात्मा में तुम सदा स्वामी (संचालक) होकर व्याप्त हो और तुममें यह जीव—आत्मा सदा आश्रित है। एवं, जीव सदा तुम्हें प्राप्त तुम्हारा 'आपिः' है, सदा तुमसे बंधा हुआ तुम्हारा बन्धु है, तुम्हारा सखा है। यह तुम्हारा साथी तुम्हें इतना प्रिय भी है कि तुमने स्वयं कुछ न भोगते हुए भी इस जीव के भोग के लिए ऐश्वर्यो से भरा यह सब संसार खोलकर रख दिया है, परन्तु फिर भी यह जीव—यह तुम्हारा ऐसा प्यारा सखा जीव इस संसार में तुम्हारे प्रति अपराध करता रहता है, तुम्हारे नियमों का भंग कर तुम्हें अप्रसन्न करता रहता है।

हे यजनीय देव ! हम जीवों को इस प्रकार तुम्हारे प्रति अपराधी होने पर क्या करना चाहिए? हमें यह चाहिए कि हम पापी होने पर तुम्हारे दिये गये भोगों को त्याग दिया करें। हे यक्षिन् ! पाप करते ही हमारे द्वारा तुम्हारे यज्ञ का भंग हो जाता है और मनुष्य को बिना यज्ञ किये भोग भोगने का अधिकार नहीं है, अतः पापी होकर हमें भोग—त्याग कर देना चाहिए, किसी भोग के त्याग के रूप में उस पाप का प्रायश्चित कर लेना चाहिए। पापी होने पर भोग कभी न करें— ऐसा करने से हमें तुम एक 'वरूथ' अर्थात् सुरक्षित घर वा आश्रय दे देते हो। हे जगदीश्वर ! तुम सर्वज्ञ हो, मेरे हृदय को जानते हो, मुझ अपने उपासक के सब सच्चे भावों को जानते हो, अतः अब जब कभी मुझसे तुम्हारे किसी नियम का भंग होगा तो मैं किसी भोग के त्यागने के द्वारा तेरी शरण में आने के लिए अपने हाथ फैलाऊँगा। हे विप्र ! हे स्वामिन् ! तब मुझे अपना 'वरूथ' अवश्य प्रदान कीजिएगा, हाथ फैलाये हुए मुझे अपनी गोद में स्थान देकर सुरक्षित कीजिएगा, कुछ समय के लिए अपने घर में मुझे आश्रय दीजिएगा, जिससे पवित्र होकर आगे के लिए मैं वैसा नियम भंग करने से अलग रहूँ।

शब्दार्थ—**वरुण**=हे वरुण ! **यः नित्यः आपिः**=जो तेरा सनातन बन्धु है वह **ते सखा**=तेरा साथी **प्रियः सन्**=तेरा प्यारा होता हुआ भी **त्वां आगांसि कृण्वत्**=तेरे प्रति पाप, अपराध किया करता है। **यक्षिन्**=हे यजनीय देव ! **एनस्वन्तः**=पापी होते हुए हम **ते मा भुजेम**=तेरे दिये भोग न भोगें **विप्रः स्तुवते वरूथं यन्धि स्म**=इस प्रकार तुम सर्वज्ञ मुझ उपासक को अपनी शरण या घर दे दो।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

शोक समाचार

बड़े दुःख के साथ आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि आर्य समाज के वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी रामानन्द प्रधान आर्य समाज ग्राम बेरी, ब्लाक फरह, जिला—मथुरा का देहावसान दिनांक 25 अक्टूबर, 2017 को हो गया। स्वामी जी ने 92 वर्ष की आयु का सफल जीवन व्यतीत किया। वह अपने पीछे तीन पुत्रों का सम्पन्न परिवार छोड़ गये। गत 20 वर्षों से वह गांव—गांव घूमकर अपने वैदिक भजनों व उपदेशों से जनता में वेद ज्ञान का प्रचार कर रहे थे। वे न्यायप्रिय, मृदुभाषी और परोपकारी विचारों के संन्यासी थे। वैदिक विरक्त मण्डल के सक्रिय प्रतिष्ठित सदस्य थे। उन्हें वर्ष 2013 में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, स्वामी इन्द्रवेश आश्रम विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक ने कर्मठ आर्य संन्यासी के रूप में सम्मानित किया था। युवा अवस्था में स्वामी रामानन्द जी ने लम्बी कूद और कुश्ती में कई पुरस्कार प्राप्त किये थे।

स्वामी रामानन्द जी के निधन से आर्य समाज की महती क्षति हुई है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और वैदिक विरक्त मण्डल के समस्त पदाधिकारी एवं कर्मचारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी पवित्र आत्मा को शांति और उनके परिवार के सदस्यों को इस दुःखदाई कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

— स्वामी आर्यवेश, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

— लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या—256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/— रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान — सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—2
दूरभाष :—011—23274771, 23260985

आर्य समाज मंदिर देवनगर, नई दिल्ली का 57वाँ वार्षिकोत्सव समारोह

आर्य समाज मंदिर देवनगर, नई दिल्ली का 57वाँ वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक 30 नवम्बर, 2017 से 3 दिसम्बर, 2017 तक समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर वृहस्पतिवार 30 नवम्बर, 2017 से रविवार 3 दिसम्बर, 2017 तक चतुर्वेद शतकीय यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया है। इस चतुर्वेद शतकीय यज्ञ के ब्रह्मा पद को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी सुशोभित करेंगे। यज्ञ का संयोजन श्री प्रदीप शास्त्री आर्य समाज देवनगर करेंगे। यज्ञ प्रातः 7.30 बजे से 9.30 बजे तक प्रतिदिन आयोजित किया जायेगा तथा रात्रि 8 से 9 बजे तक पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के विद्वतापूर्ण ओजस्वी प्रवचन होंगे। इस अवसर पर 30 नवम्बर को दोपहर 3 से 4 बजे तक आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया है। शुक्रवार एवं शनिवार दिनांक 1 एवं 2 दिसम्बर, 2017 को सायं 5.30 से 6.30 बजे तक आर्य बाल सम्मेलन के अवसर पर 15 वर्ष तक के बच्चे संन्ध्योपासना के मंत्र एवं अन्य वैदिक मंत्र सुनायेंगे। इसके अतिरिक्त बच्चों द्वारा अन्य कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये जायेंगे। बच्चों को पुरस्कार भी प्रदान किये जायेंगे। रविवार, 3 दिसम्बर, 2017 को यज्ञ की पूर्णाहुति प्रातः 8 से 10 बजे तक 10 से 11.30 बजे तक अन्य कार्यक्रम तथा 11.30 से 12.30 बजे तक पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी प्रवचन से श्रोतागण लाभ उठायेंगे। पूरे कार्यक्रम में आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क के मनोहारी भजनों का कार्यक्रम विभिन्न अवसरों पर निरन्तर होता रहेगा। आपसे प्रार्थना है कि आप सपरिवार अपने इष्ट मित्रों सहित भारी संख्या में इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के वैदिक प्रवचनों के द्वारा धार्मिक एवं आध्यात्मिक लाभ उठायें एवं उत्सव की शोभा बढ़ायें।

— सुशील बाली एडवोकेट, प्रधान

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

ऋषि निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में विशेष छूट उपलब्ध

33 पुस्तकों का 620/— रुपये का सैट
मात्र 370/— रुपये में प्राप्त करें

1. यजुर्वेद	250.00	17. वेद का इस्लाम पर प्रभाव	3.00
2. बन्दा वीर बैरागी	18.00	18. वैदिक धर्म की रूपरेखा	22.00
3. आस्तिक नास्तिक संवाद	7.00	19. वैदिक कोष संग्रह	15.00
4. वेद संदेश	10.00	20. विवेकानन्द विचार धारा	8.00
5. आत्मा का स्वरूप	8.00	21. विषलता इस्लाम की फोटो	8.00
6. आचार्य शुक्रराज शास्त्री	5.00	22. वैदिक सिद्धान्त	20.00
7. आर्य ध्वज	3.00	23. धर्मान्तरण	10.00
8. आर्यसमाज के दस नियमों की व्याख्या	20.00	24. नारायण स्वामी जीवनी	8.00
9. गो—हत्या या राष्ट्र हत्या	15.00	25. काशी शास्त्र	3.50
10. दयानन्द वचनामृत	5.00	26. आदर्श त्रैतवाद	35.00
11. इक्कीसवीं सदी का भारत	4.00	27. ब्रह्म उपासना	8.00
12. मुगल साम्राज्य का क्षय भाग—1, 2	20.00	28. वेद निबन्ध स्मारिका	30.00
13. मुगल साम्राज्य का क्षय भाग—3, 4	15.00	29. आर्य समाज के संगठनात्मक सूत्र	20.00
14. वेदांग प्रकाश	20.00	30. श्रद्धांजलि	12.00
15. वैदिक सूक्ति सुधा	5.00	31. शिखों का तुष्टिकरण	2.00
16. वेद और आर्य शास्त्रों में नारी	4.00	32. एक ही मार्ग	3.00
		33. मतान्तरण के अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र	4.00

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित उपरोक्त 33 पुस्तकों का 620 रुपये का सैट महर्षि निर्वाण दिवस (दीपावली) पर 40 प्रतिशत की विशेष छूट पर मात्र 370 रुपये में दिया जा रहा है। डाक से भेजने पर डाक व्यय 130 रुपये अलग से देने होंगे, इस तरह से डाक से मंगाने वाले महानुभावों को कुल 500 रुपये भेजने होंगे। यह राशि ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से डी.डी. या मनीआर्डर द्वारा भेज सकते हैं और यदि स्वयं आकर ले जाते हैं तो उन्हें डाक व्यय नहीं देना होगा।

प्राप्ति स्थान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'', 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002
दूरभाष :— 011—23274771, 23260985

प्रकाशन की तिथि : 16 नवम्बर, 2017 वैदिक सार्वदेशिक
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

मेरठ में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का विशाल आयोजन

हजारों यज्ञप्रेमी स्त्री–पुरुषों ने अर्पित की आहुतियाँ

आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय बरनावा के ब्रह्मत्व में आयोजित महायज्ञ में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का यज्ञ विषय पर प्रभावशाली व्याख्यान

ऐतिहासिक नगरी मेरठ में गत 5 से 12 नवम्बर, 2017 तक त्यागी छात्रावास के मैदान में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का विशाल आयोजन किया गया जिसमें हजारों यज्ञप्रेमी स्त्री–पुरुषों ने आहुतियाँ प्रदान कर यज्ञ को सफल बनाया। इस महायज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित करने वाले योगाचार्य श्री अरविन्द कुमार शास्त्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय बरनावा, (बागपत) द्वारा स्थान–स्थान पर चतुर्वेद पारायण महायज्ञों का आयोजन निरन्तर कई वर्षों से किया जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप हजारों लोगों में यज्ञ के प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न हो रही है। मेरठ के इस विशाल महायज्ञ का आयोजन भी उसी क्रम में किया गया और दिल्ली के चारो तरफ फैले हुए स्मॉग के प्रभाव को कम करने के लिए यह यज्ञ विशेष रूप से आयोजित किया गया था। इस 7 दिवसीय यज्ञ में अनेक प्रतिष्ठित लोगों ने सम्मिलित होकर अपना सहयोग एवं समर्थन प्रदान किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी 11 नवम्बर को प्रातः यज्ञ में सम्मिलित हुए और यज्ञ के उपरान्त यज्ञ विषय पर अपना प्रभावशाली व्याख्यान देकर उपस्थित जन–समूह को यज्ञ से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के भौतिक पक्ष पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अग्नि में घृत डालने से जो गैसें पैदा होती हैं उनसे न केवल वायु प्रदूषण समाप्त होता है बल्कि हवा में विद्यमान हानिकारक कीटाणु या तो भाग जाते हैं या मर जाते हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ को जीवन से जोड़कर कैसे चलना चाहिए इस सम्बन्ध में देवयज्ञ की विभिन्न प्रक्रियाओं पर व्यवहारिक व्याख्या प्रस्तुत करके श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया। उन्होंने बताया कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त करना है और इसके लिए निष्काम कर्म की भावना को आत्मसात करना अत्यन्त आवश्यक है। निष्कामता के बिना धर्म, अर्थ, काम या मोक्ष को प्राप्त नहीं किया जा सकता। यज्ञ निष्कामता को प्राप्त करने एवं त्याग भाव को आत्मसात करने का एक प्रभावशाली कार्य है तथा इसके अभ्यास से और यज्ञ में होने वाली प्रक्रिया को आत्मसात करने से हमें निष्कामता की अवस्था में पहुँचने के लिए विशेष ऊर्जा मिलती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में यज्ञीय भाव अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अपने हृदय में संकल्प की अग्नि प्रज्ज्वलित करनी चाहिए जिससे निष्कामता में बाधक, काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार, इर्ष्या, द्वेष आदि दुर्गुणों को संकल्परूपी अग्नि से भस्म कर सकें। स्वामी आर्यवेश जी के आह्वान पर अनेक लोगों ने यज्ञ करने और परोपकार के कार्य करने का संकल्प लिया।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री ने सैकड़ों याज्ञिक परिवारों को यज्ञमय जीवन जीने का संकल्प दिलवाया और निकट भविष्य में एक विशाल महायज्ञ आयोजित करने की घोषणा की जिसमें हजारों यजमान सैकड़ों यज्ञवेदियों पर विराजमान होकर आहुतियाँ प्रदान करेंगे। महायज्ञ में क्रांतिकारी कवि स्वामी सत्यवेश जी महाराज की कविताओं से श्रोतागण रोमांचित हो उठे। इस महायज्ञ में जिन विशिष्ट महानुभावों ने भाग लेकर आहुति दी उनमें मुख्यतया श्री राजेन्द्र जी अग्रवाल सांसद मेरठ, श्री सत्य प्रकाश जी अग्रवाल विधायक मेरठ छावनी, श्री आर.एन. धामा उपायुक्त मेरठ, श्री मान सिंह पुण्डीर तहसीलदार मेरठ, आचार्य विनोद कुमार शास्त्री प्रधानाचार्य, आचार्य गुरुवचन जी, श्री जयवीर दत्त जी, मास्टर संजीव कुमार जी गुरुकुल लाक्षागृह बरनावा, श्रीमती पुष्पा मित्तल धर्मपत्नी स्व. सेठ मोहन लाल मित्तल दिल्ली, स्वामी प्रद्युम्न जी महाराज, श्री आकाशदीप जी गोयल किरतपुर बिजनौर, श्री रघुवीर सिंह आर्य शामली आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। महायज्ञ में यजमान बनने वाले महानुभावों में श्री चन्द्रहास जी एवं उनकी पत्नी श्रीमती अनिता देवी, डॉ. अनिल कुमार व श्रीमती सुमन देवी, डॉ. विजेन्द्र गुप्ता व श्रीमती आशा गुप्ता मोदीनगर, श्री सतीश कुमार व श्रीमती शकुन्तला देवी, चेयरमैन करनावल, श्री पुनीत कुमार व श्रीमती शिवानी, श्री रविन्द्र सिंह व श्रीमती रेनू देवी, श्री कुलदीप व श्रीमती शशि, श्री शिवकुमार शास्त्री व श्रीमती सविता देवी, श्री महेन्द्र सिंह आर्य व श्रीमती सरोज देवी, श्री महावीर सिंह व श्रीमती मुकेश देवी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। आर्य समाज थापर नगर, मेरठ के प्रधान श्री राजेश सेठी, त्यागी छात्रावास के प्रबन्धक श्री महेन्द्र सिंह त्यागी, श्री राजपाल जी वानप्रस्थ, आचार्य विजयपाल जी, श्री अंकुर भारद्वाज, ब्र. ऋषिकुमार, श्री ओमपाल आर्य, श्री सहदेव आर्य महामंत्री यज्ञ समिति, श्री श्योदान शास्त्री, श्री उदयवीर सिंह शाहपुर (इनके परदादा का नामकरण महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किया था) आदि महानुभाव उपस्थित थे। यज्ञ के संयोजक डॉ. अनिल जी ने पूरे कार्यक्रम का संयोजन बड़ी कुशलता के साथ संभाला हुआ था। यह महायज्ञ अपना ठोस प्रभाव छोड़कर भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

आचार्य ज्ञानेश्वर जी का असामयिक निधन

यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्, दर्शनो के मर्मज्ञ अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आर्यवन आश्रम, रोजड़, गुजरात के संचालक आचार्य ज्ञानेश्वर जी का असामयिक निधन दिनांक 14 नवम्बर, 2017 को मध्य रात्रि में हो गया है। इस दुःखद समाचार से समुचे आर्य जगत को गहरा आघात लगा है। क्योंकि आचार्य जी आर्य समाज की महान विभूति थे। वह बड़ी निष्ठा के साथ वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में लगे हुए थे। ऐसे विद्वान एवं मनीषी का निधन पूरे आर्य जगत् के लिए भारी आघात एवं अपूर्णीय क्षति है। परन्तु परमात्मा के निर्णय को हम सभी बदलने में असमर्थ हैं, इसलिए न चाहते हुए भी उनके द्वारा लिये गये निर्णय को असहाय अवस्था में भी हम सबको सहन करना ही पड़ता है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आचार्य जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि के रूप में परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि आचार्य जी की आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें। हम सबकी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि आचार्य जी वैदिक मिशन के प्रचार–प्रसार के जिस कार्य को अधूरा छोड़ गये हैं उसे पूरा करने का संकल्प लें।

– स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।